DELHIIN/2007/20081 Date of Publication: 13/12/2020 G-3/DL(N)/202/2019-21

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–14 अंक–07 दिसम्बर 2020 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

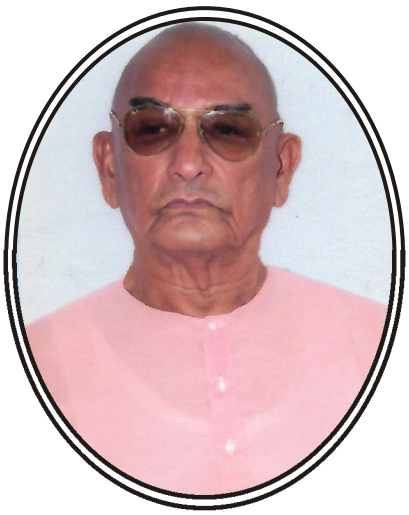

तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानंद जी

संस्थापकः

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल (रजि. सं. S/20762)

सत्संग भवन – सी॰एस॰/ओ॰सी॰एफ॰ नं॰ 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85

मो॰ : 9810344596, 011–27574151

ई–मेलः atmagyanp@gmail.co,

वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.com

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

इस अंक में प्रकाशितः–

1. परमात्मा के विशाल विज्ञान का अनुमान कोई भी प्राणी नहीं लगा सकता है।
2. निरन्तर साधना करने से परमात्मा का निस्वार्थ प्रेम प्रकट होता है।
3. अलौकिक एवं अविनाशी ज्ञान का अनुभव बाहरी इन्द्रियों के द्वारा नहीं किया जाता है।
4. अज्ञान को तत्व ज्ञान से ही समाप्त किया जा सकता है।
5. सत्य ब्रह्म ही सच्ची शान्ति का स्रोत है।
6. अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग–1)

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः– चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.com है

सम्पादकीय

रुहानी गुरू आनन्द के दाता शाश्वत् दण्डवत् प्रणाम!!!

परमात्मा के विशाल विज्ञान का अनुमान कोई भी प्राणी नहीं लगा सकता है।

आज का मानव वैज्ञानिकों द्वारा किये गये भौतिक विकास से तो आश्चर्य चकित हो रहा है और उसको ही महान उपलब्धि समझ कर अपने आपको महान शक्तिशाली समझ रहा है परन्तु अपने परमपिता परमात्मा द्वारा किये गये निस्वार्थ उपकारों को तनिक भी महत्व नहीं दे रहा है तथा परमात्मा की महान शक्ति आत्मा (स्वयं) को भी नहीं पहचान रहा है जिसमें दया, अमृत एवं निस्वार्थ प्रेम छिपा है परमात्मा ने सभी जीवात्माओं के लिए सकल पदार्थों की रचना की है। मानव अत्मिक विकास की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दे रहा है इसलिए वह भौतिक सम्पत्ति से सम्पन्न होते हुए भी अधीर, अशांत एवं दुःखी हैं। भौतिक विकास से उसका मन और अधिक चंचल हो गया है। मन की इस चंचलता को रोकने का कोई उपाय इस संसार में नहीं है केवल अचल एवं अविनाशी परमशक्ति परमात्मा ही इस चंचल एवं अशान्त मन को एकाग्र एवं शान्त करने में समर्थ है। समय–समय पर कोई तत्वदर्शी सन्त रूहानी गुरू परमात्मा की महिमा को समझाने के लिए इस पृथ्वी पर आते हैं परन्तु अज्ञानी मानव गुरू परमात्मा के अलौकिक ज्ञान पर भी कुतर्क करके उसकी अवहेलना करते हैं। राजनीति में उलझा हुआ व्यक्ति धर्मनीति अर्थात् परमात्मा की नीति को भी नहीं समझ पा रहा है। वह गुरू की निस्वार्थ सेवा एवं निस्वार्थ प्रेम को भी समझने में असमर्थ है। आनन्द के दाता गुरू परमात्मा को तत्व से न जानने के कारण मानव कंकर पत्थरों को भगवान समझकर पूज रहा है अतः जड़ पूजा के कारण उसके अन्दर जड़ता का प्रभाव निरन्तर बढ़ता जा रहा है। आज का मानव सत्संग के माध्यम से सत्य ज्ञान का प्रचार करने वाले तथा सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराने वाले तत्वदर्शी सन्त को भी सही रूप से नमन नहीं कर रहा है इसलिए वह अज्ञानता में अपने जीवन के असली उद्देश्य से भटक रहा है प्रकृति के आकर्षण से मोहित होकर संसारिकता में दौड़ रहा है। यह मनुष्य शरीर भोग के लिए नहीं बल्कि योग साधन के लिए मिला है इसी शरीर में परमात्मा तथा उसकी अंशी आत्मा (स्वयं) की अनन्त शक्तियों का अनुभव किया जा सकता है। सर्वशक्तिमान रूहानी गुरू परमात्मा की महिमा अनन्त एवं अवर्णनीय है उनके अलौकिक विज्ञान को समझना आसान नहीं है। इस अविनाशी महाशक्ति से जगत की अनन्त सृष्टियों का संचालन हो रहा है। उनकी अलौकिक रचनाओं का अनुमान लगाना बहुत मुश्किल है ऐसे गुरू परमात्मा ही जानने योग्य अर्थात् "ज्ञेय" तथा पूजने योग्य है। इसी अविनाशी शक्ति से सम्पूर्ण जड़ प्रकृति तत्वों को ऊर्जा मिल रही है। यह महाशक्ति परम प्रकाश के रूप में निरन्तर चमकती रहती है। इसी प्रकाश से सभी जीवों के जीवन में प्रकाशित हो रहे हैं। जैसे वर्षा की बूंदों को नहीं गिना जा सकता है वैसे ही परमात्मा के विशाल विज्ञान द्वारा होने वाली रचनाओं का अनुमान कोई भी प्राणी नहीं लगा सकता है परमात्मा ही सभी जीवों का परमपिता तथा परिपालक है उसके उपकारों को मानव भुला देता है यह मानव की महान अज्ञानता है।

निरन्तर साधना करने से परमात्मा का निस्वार्थ प्रेम प्रकट होता है

जब कोई व्यक्ति तत्वदर्शी सन्त से ज्ञान उपदेश हो जाने पर निरन्तर साधना करता है तो उसका मन पावन एवं शान्त हो जाता है। उसके चित्त में पड़े कुसंस्कारों के बीज ज्ञान अग्नि में उसी प्रकार जल जाते हैं जैसे प्रज्ज्वलित अग्नि में इंधन जल कर भस्म हो जाते हैं जब साधक का चित्त विकारों से मुक्त हो जाता है तब साधक को निर्गुण परमात्मा की अनुभूति अपने अन्दर होने लगती है फिर साधक अलौकिक दिव्य आनन्द का अनुभव करने लगता है। साधक का परमात्मा के प्रति निस्वार्थ प्रेम उसकी आँखों में आंसू बनकर बहने लगता है। वह देह में रहते हुए भी विदेह हो जाता है। उसकी कर्म करते हुए भी कर्मों में आसक्ति नहीं रहती है। वह भौतिक संसार में रहते हुए भी अपनी आत्मा में स्थित रहता है। इस प्रकार आत्मिक जगत में प्रवेश कर साधक स्वयं को अजर–अमर एवं अविनाशी आत्मा मानकर हमेशा आनन्दित रहता है। वास्तव में वह अध्यात्मिक जगत का बादशाह हो जाता है क्योंकि वह निर्भीक निर्विकार एवं निर्मल बन जाता है। उसके अन्दर से दीनता–हीनता समाप्त हो जाती है। वह आलसी व स्वार्थी न रहकर निस्वार्थी एवं परमार्थी बन जाता है। निष्कपट भाव से परमात्मा का सुमरन साधन करने वाला साधक ही परमात्मा के परम सुख का अनुभव कर सकता है। उस साधक के लिए सारी सृष्टि ईशमय बन जाती है। अतः वह समदर्शी बन जाता है। जब तक मानव के मन में कामना व वासना रूपी गन्दगी भरी रहती है तब तक उसके अन्दर परमात्मा के प्रति निस्वार्थ प्रेम का अंकुर नहीं फूट पाता है परमात्मा के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट करने के लिए सत्संग, सेवा तथा साधन अति आवश्यक है साधना करने से मन में ज्ञान का उजाला होने लगता है। उस उजाले से कामना व कुसंस्कारों का अंधियारा मिट जाता है। ज्ञान के उजाले में ही अपने यथार्थ स्वरूप को देखा जा सकता है। जिस प्रकार गन्दे पानी या नदी के बहते चंचल पानी की लहरों में अपनी परछाई स्पष्ट दिखायी नहीं देती है वैसे ही विषय विकारों से युक्त मन में तथा मन की चंचलता में परमात्मा के दर्शन तथा अपनी आत्मा के यथार्थ स्वरूप को नहीं देखा जा सकता है। जब तक साधक के अन्दर परमात्मा से मिलने की व्याकुलता नहीं उठती तब तक परमात्मा भी द्रवित नहीं होते हैं परन्तु जब सेवक परमात्मा को पाने के लिए सच्चे हृदय से पुकारता है तब वे दौड़े चले आते हैं। जैसे चोरों को चाँदनी रात अच्छी नहीं लगती है वैसे ही कामना एवं वासना को परमात्मा का निस्वार्थ प्रेम अच्छा नहीं लगता है। जैसे कीचड़ से कीचड़ को नहीं धोया

जा सकता है वैसे ही वासना एवं कामना से कभी भी कामना व वासना समाप्त नहीं हो सकती है। जैसे कीचड़ स्वच्छ जल से साफ हो जाती है वैसे ही परमात्मा के प्रति अनन्य प्रेम से कामना एवं वासनाएँ मिट जाती हैं। जब परमात्मा के प्रति निस्वार्थ प्रेम से मन का मैल धुल जाता है तब साधक का रोम–रोम रोमांचित हो जाता है। उसका हृदय सागर के समान गहरा एवं विशाल हो जाता है। वह परमात्मा के आगोश में एक शिशु की भाँति खेलने लगता है। फिर वह परमात्मा को अपने आप से अलग महसूस नहीं करता है। ऐसी स्थिति में वह परमात्मा के परम सुख का अनुभव करता है। अतः साधक को चाहिए कि वह तत्वदर्शी सन्त के सान्निध्य में अर्न्तमुखी होकर साधना व सेवा करता हुआ अपने मन व चित्त के विकारों को समाप्त करके अपने जीवन को पूर्ण शान्त एवं आनन्दमय बनाए। परमात्मा को निर्मल मन वाला व्यक्ति ही प्राप्त कर सकता है। परमात्मा को छल कपट अच्छा नहीं लगता है। मन की निर्मलता के लिए सच्चे सन्त के सान्निध्य में साधना करना अति आवश्यक है।

भजन

कोटि–कोटि प्रणाम सन्त जी, ज्ञान का दीप जलाया है।
ज्ञान की दृष्टि खोल सेवक की, अचरज खेल दिखाया है।।
अपने आपको न जान सका, मैं भटक रहा बन संसारी।
घट का दीप बुझा था मेरे, अन्दर फैली अंधयारी।।
बुझे दीप में ज्योति देकर, आत्म रूप लखाया है। ज्ञान की दृष्टि.....
प्रकृति ने मानव के अन्दर, मोह का जाल बिछाया है।
इसी जाल में फंसा जीव है, ये रूहानी गुरू की माया है।।
दुर्लभ मानव योनि पाकर भी, ज्ञान समझ नहीं पाया है। ज्ञान की दृष्टि.....
सृष्टि खेल रचाया जिसने, मानव उससे विमुख हुआ।
ज्ञान की दृष्टि मिली सन्त से, सेवक फिर गुरू मुख हुआ।।
रूहानी गुरू की कृपा से सन्त, जग में क्रान्ति लाया है। ज्ञान की दृष्टि .....
सुमरन साधन सेवा से, लग गुरू मिलन की आस में।
श्वांस शब्द में गुरू मिल जायें, पल भर की तलाश में।।
त्रिकुटि महल का ताला खोला, गुरू दरबार दिखाया है। ज्ञान की दृष्टि .....
चेतन योगी ने आज के युग में, गुरू का ज्ञान कराया है।
सकल जगत में ज्ञान फैलाकर, गुरू महिमा को गाया है।
इसी ज्ञान से चेतन सन्त भी, मोक्ष गति को पाया है। ज्ञान की दृष्टि .....

अलौकिक एवं अविनाशी ज्ञान का अनुभव इन्द्रियों के द्वारा नहीं किया जाता है।

परमपिता परमात्मा अलौकिक एवं अविनाशी है इसलिए उसका ज्ञान भी अलौकिक तथा अविनाशी है जिसका अनुभव इन्द्रियों के द्वारा नहीं किया जा सकता है वह गुणातीत अर्थात् तीन गुणों से परे है इन्द्रियों द्वारा ग्रहण न किया जाने के कारण इन्द्रियातीत है इस ज्ञान का अनुभव किसी तन्त्र–मन्त्र या जप तप से नहीं किया जा सकता है। जप भी तीन प्रकार के होते हैं। एक है मौखिक जप दूसरा है मानसिक जप तथा तीसरा है अजपा जप। मुख से तथा मन से जपने वाले मन्त्र निद्रावस्था में बन्द हो जाते हैं। जब जपने वाला ही सो गया तो फिर रक्षा कौन करेगा? परमात्मा एक चैतन्य महाशक्ति है जो अखण्ड रूप से निरन्तर जाग्रत रहती है। उसका जप अजपा जप है वह निरन्तर सोते व जागते में भी चलता रहता है। मन श्वांस में होने वाले शब्द के साथ जुड़ता है जिससे अचेतना में भी चेतना आ जाती है। वह ब्रह्म नाद की अनन्त ध्वनियों को सुनकर आनन्दित होता है तथा ब्रह्म ज्योति का ध्यान करके अपने मोह अन्धकार को दूर करता है। परमात्मा अनन्त ब्रह्माण्डों को चलाने वाला निर्गुण एवं निराकार है वह अखण्ड प्रकाश स्वरूप है जिसके प्रकाश से पिण्ड, ब्रह्माण्ड, सूर्य चन्द्रमा तथा तारागण सभी प्रकाशित हो रहे हैं। सभी प्राणियों को बोलने, चलने, सुनने तथा निर्णय करने की शक्ति भी उसी परमात्मा से मिलती है। उसके एक शब्द से ही अनन्त शब्द प्रकट होते हैं। वही शब्द सबके मुख वाणी में बोल रहा है। वही शब्द पृथ्वी, आकाश, हवा, पानी तथा अग्नि में गूँज रहा है। जब किसी सच्चे सन्त से सत्य ज्ञान की प्राप्ती हो जाती है तब इस अविनाशी ज्ञान का अनुभव अपने अन्दर प्रत्यक्ष रूप में होता है परन्तु संसार में भटकता मानव ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश नहीं करता है। बिना ज्ञान के मानव की स्थिति एक गुलाम देश के नागरिक की तरह होती है। गुलाम देश के नागरिक की मांग को सरकार स्वीकार नहीं करती है। जब देश आज़ाद हो जाता है तो सरकार नागरिकों की मांगों को सुनती भी है और उनकी मांगों को पूरा भी करती है। पाँच तत्व तीन गुणों में जितने भी जीव प्राणी हैं, वे सभी प्रकृति माया की गुलामी में पलते हैं। प्रकृति गर्भावास की माँ है तथा परमात्मा बीज रूप पिता है। अधिकांश मानव अज्ञान अन्धकार में ही जीते हैं उनका जन्मना और मरना बेवश होता है इन्हें परमात्मा के मार्ग पर चलने का ज्ञान नहीं होता है इसलिए वे अपने कर्मों के भोगों को भोगने के लिए विवश होते हैं। पहले तो मानव योनि मिलना ही बड़ा दुर्लभ है फिर इस प्रकृति की गुलामी से छूटने का ज्ञान मिलना उससे भी कठिन है। इस ज्ञान का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए परमात्मा का भेद जानने वाले तत्वदर्शी

सन्त की खोज करना चाहिए। परमात्मा एक सागर की तरह है। उसमें अनेक ऊँची–ऊँची लहरें उठती हैं, अतः सागर के किनारे पर पहुँचना भी बड़ा मुश्किल होता है। उसमें से जल भरना तो और भी मुश्किल होता है। परन्तु बादल उस सागर के जल को आसानी से उठा लेता है और पृथ्वी पर मीठे जल की वर्षा करता है। जिससे पृथ्वी पर हरियाली छा जाती है। इसी प्रकार सच्चे सन्त भी परमात्मा के ज्ञान सागर से सत्संग रूपी वर्षा लाकर श्रद्धावान मानवों के जीवन में बरसाते हैं। जिससे मानव जीवन में शान्ति एवं खुशहाली छा जाती है। मानवों का जीवन प्रकृति माया की गुलामी से मुक्त हो जाता है। वे पूर्णरूप से स्वतन्त्र हो जाते हैं और उनके मानव जीवन के उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है। परन्तु कुछ मनुष्य तो इस संसार में केवल भोगों के लिए ही जीते हैं। वे भोगों के परिणाम के विषय में सोच भी नहीं पाते हैं इसलिए स्वयं दुःखों को जीवन में महसूस करते हैं तथा दूसरों को भी कष्ट पहुँचातें रहते हैं। उनका जीवन पशुओं से भी बदत्तर होता है। परन्तु कुछ मनुष्य उत्तम श्रेणी के होते हैं जो अविनाशी ज्ञान का साधन करके परमार्थ की सेवा करते हैं। सच्चे सन्त सारे विश्व समुदाय को अज्ञान अन्धकार से निकाल कर ज्ञान के प्रकाश में लाते हैं तथा मानव को परमात्मा के ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराकर उनके जीवन में पूर्ण शान्ति स्थापित करते हैं। इस अलौकिक ज्ञान की महिमा को वेद शास्त्र भी गाते हैं।

भजन

अलौकिक ज्ञान मेरे गुरूवर का, जीवन में क्रान्ति लाता है।
जीवन के सब दोष मिटाकर, गुरू से मेल कराता है।।
अलौकिक ज्ञान को पाकर सेवक, धन्य–धन्य हो जाता है।
गुरू अविनाशी की सेवा में, जीवन बलि चढ़ाता है।।
गुरू शब्द के सुमरन से वह भव सागर तर जाता है। जीवन के सब .....
काम क्रोध और लोभ की अग्नि, गुरू अमृत से बुझाता है।।
जीवन की इस फुलवारी में, सुन्दर फूल खिलाता है।।
गुरू ज्ञान की प्रेम धारा से, निस्वार्थ प्रेम जगाता है। जीवन के सब .....
अज्ञान अन्धेरा मिटे जन्मों का, ज्ञान का दीप जलाता है।
गुरू अविनाशी के दर्शन से, मन का भरम मिटाता है।।
गुरू ज्ञान की ब्रह्म वर्षा से, ब्रह्म स्नान कराता है। जीवन के सब .....
चेतन योगी निष्काम ज्ञान से, पापों का हवन कराता है।
जन्म मरण का रोग मिटाकर, जीवन मुक्त बनाता है।।
सत्य सेवक गुरू सेवा से, जीवन सफल हो जाता है। जीवन के सब .....

अज्ञान को तत्व ज्ञान से समाप्त किया जा सकता है।

इस संसार में लोग अनेक प्रकार से योग साधन कर रहे हैं। इनमें कुछ हठयोगी होते हैं। जो प्राणायाम तथा नेति–धोति आदि करके कुछ सिद्धियाँ प्राप्त कर लेते हैं। वे इन सिद्धियों का चमत्कार दिखाकर भोली–भाली जनता को गुमराह करके अज्ञान अन्धकार में भटका देते हैं। ऐसे योगी तत्व ज्ञान से वंचित होते हैं। अतः वे मानव को मोक्ष का मार्ग नहीं बता सकते हैं। इसके अतिरिक्त योग साधना करने वाले तत्वज्ञानी योगी भी होते हैं जो परमात्मा तत्व को भली भांति जानते हैं उन्हें तत्वदर्शी सन्त कहा जाता है। जब मानव के ज्ञान को अज्ञान द्वारा ढ़क दिया जाता है तब मानव के अन्दर मोह अन्धकार छा जाता है। वह मोह अन्धकार तब तक समाप्त नहीं होता है जब तक ज्ञान का प्रकाश न हो जाए। इस ज्ञान प्रकाश के लिए उसे तत्वदर्शी सन्त की शरण जाना पड़ता है तथा उनको दण्डवत् प्रणाम करके अपनी सेवा से प्रसन्न करना होता है एवं तत्वज्ञान को प्राप्त करने की प्रार्थना करनी पड़ती है। तब वे तत्वज्ञानी योगी मानव को तत्व ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराते हैं। जिससे उसकी ज्ञान दृष्टि खुल जाती है। तब उसका मोह (अज्ञान) समाप्त हो जाता है। यह तत्वज्ञान अत्यन्त गूढ़ एवं गोपनीय होता है। इस तत्वज्ञान के द्वारा ही मानव अपने यथार्थ स्वरूप तथा परमात्मा के दिव्य स्वरूप को देख पाता है। बाहरी नज़रों से दिखायी देने वाला यह संसार परमात्मा का विराट स्वरूप अर्थात् भयानक रूप है। परमात्मा के दिव्य रूप को अपने अन्दर ही ज्ञान दृष्टि से देखा जाता है। योगियों में तत्वज्ञान को जानने वाले योगी को वेद–शास्त्रों में सबसे श्रेष्ठ बताया गया है। मानव का यह बाहर दिखायी देने वाला शरीर नश्वर है। अतः इस शरीर की किसी भी रूप में पूजा करना अविधिपूर्वक है। असली स्वरूप तो अन्दर छिपा होता है। उसकी पहचान ही सच्ची पहचान है। जब योगी योग साधन करके अपने अन्दर ज्ञान अग्नि को प्रकट कर लेता है तब वह सकाम कर्मों के बीज को जलाकर उन्हें नष्ट कर देता है तब उसका जीवन निष्काम एवं निस्वार्थी हो जाता है। इस प्रकार परमात्मा निस्वार्थ आत्मा भी निस्वार्थ तथा मानव जीवन भी निस्वार्थ हो जाता है। योग साधना की परिपक्व अवस्था में योगी अन्दर ज्ञान प्रकाश से ओत–प्रोत हो जाता है। ज्ञान चक्र के ऊपर जो ज्ञान प्रकाश है वह साक्षात गुरू का प्रकाश है जो लाखों करोड़ों सूर्य के प्रकाश से भी अधिक है उसके पास पहुँचने पर योगी को गुरू चुम्बक की तरह अपनी ओर खींच लेते हैं। फिर योगी समाधिष्ठ जो जाता है। इस प्रकार आत्मा तथा परमात्मा ऐसे

एकाकार हो जाते हैं जैसे दो नदियों की धारा एक दूसरे में मिलने पर उनके जल को अलग–अलग नहीं किया जाता सकता है इस प्रकार से तत्वज्ञानी योगी भी वास्तव में सत्य सनातन परमात्मा स्वरूप ही हो जाता है इस पर किसी भी प्रेमी को संशय या भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। सभी जीवात्माएँ परमात्मा "रू" की अंशी आत्मारूपी "रू" हैं आत्मा को अपने परमपिता से मिलने पर ही पूर्ण शान्ति मिलती है अतः जीवात्मा सदैव परमात्मा के सुमरन साधन एवं ध्यान करने के लिए प्रयासरत रहती है। जब जीवात्मा समय के तत्वदर्शी सन्त से ज्ञान प्राप्त करके धर्मात्मा हो जाती है। तब उसे परमात्मा के सत्य ज्ञान का गुणगान करने में अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है। उसके अन्दर ज्ञान वैराग्य एवं विवेक जाग्रत हो जाता है। फिर वह गुरू से विमुख हुई जीवात्मा गुरू मुख हो जाती है। सम्पूर्ण सृष्टि में भारत की महानता इस अध्यात्म ज्ञान (तत्वज्ञान) से ही है। भारत में इस तत्वज्ञान का बोध कराने वाले सन्त हर युग में रहते हैं। आज के युग में तत्वदर्शी सन्त श्री परम चेतनानन्द जी इस ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध मानव मात्र को करा रहे हैं। इस तत्वज्ञान से ही अज्ञान का पर्दा समाप्त होता है तभी अपने सच्चे स्वरूप की पहचान होती है।

भजन

अज्ञानी मानव कुछ तो कमा ले, थोड़ा समय सत्संग में बिता ले।
थोड़ा समय भी जो सत्संग में देगा, जीवन अपना सफल कर लेगा।
खुल जायेंगे उसकी किस्मत के ताले, अज्ञानी मानव कुछ तो कमा ले। (1)
तू ही बता तेरा क्या है जहान में, एक दिन जाना होगा तुझे शमशान में।
कर देंगे तुझको चिता के हवाले, अज्ञानी मानव कुछ तो कमाले। (2)
जीवन में तेरे छाया है अन्धेरा, तू अगर चाहे तो हो जा सवेरा।
घट में ज्ञान का दीप जलाले, अज्ञानी मानव कुछ तो कमा ले। (3)
सुन ले तू चेतन सन्त की अमृतवाणी, ज्ञान को पा बन आत्म ज्ञानी।
सेवक बन पी अमृत के प्याले, अज्ञानी मानव कुछ तो कमाले। (4)

सत्य ब्रह्म ही सच्ची शान्ति का स्रोत है।

सत्य ब्रह्म अचल सत्य एवं सनातन है यही सत्य ब्रह्म ही सच्ची शान्ति का स्रोत है। सच्चे सन्त मानव के अशान्त जीवन का तार सत्य ब्रह्म से जोड़ देते हैं इसलिए वे ही समाज के सच्चे मार्ग दर्शक होते हैं वे परमार्थी एवं दयालु होते हैं इसलिए सन्त समाज के अशान्त मानव के जीवन में सत्य ज्ञान से सच्ची शान्ति पहुँचाते हैं। सन्त के अतिरिक्त अन्य कोई भी इस कार्य को करने में समर्थ नहीं है क्योंकि माता–पिता अपने बच्चे का पालन–पोषण तो अच्छी प्रकार से कर सकते हैं उनके लिए अच्छी भौतिक शिक्षा का प्रबन्ध कर सकते हैं। परन्तु उनके अशान्त जीवन में शान्ति स्थापित नहीं कर सकते हैं। इसी प्रकार बच्चे भी माता–पिता की शरीर सम्बन्धी सेवा तो कर सकते हैं परन्तु अशान्त माता–पिता के जीवन में शान्ति नहीं पहुँचा सकते हैं। इसी प्रकार किसी देश का राजा भी अपने देश की अशान्त प्रजा को शान्ति प्रदान नहीं कर सकता क्योंकि वह भी सच्ची शान्ति के स्रोत से अनभिज्ञ हैं। जैसे किसी सूखी नदी में जल ऊपर दिखायी नहीं देता है परन्तु उसके नीचे जल छिपा होता है यदि थोड़ा खोदकर देखा जाये तो वहाँ पानी निकल आता है। इसी प्रकार से इस मानव जीवन में बाहरी साधनों से शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती है। यदि आन्तरिक साधन किया जाये तो जीवन में शान्ति स्थापित हो जाती है। इस आन्तरिक साधना का प्रयोगात्मक बोध सन्त कराते हैं वे मानव के अन्धकारमय जीवन में ज्ञान प्रकाश जागरित कर देते हैं। जिससे उसका जीवन प्रकाशमय हो जाता है। उस प्रकाश में मानव अपने अन्दर छिपी हुई आन्तरिक दिव्य शक्तियों को प्रकट रूप में देख लेता है और उनका प्रयोग जीवन को आदर्शमय बनाने में करने लगता है। अज्ञान के कारण ही मानव में अनेक भ्रान्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस अज्ञान के पर्दे को मानव स्वयं हटाने में असमर्थ रहता है। जैसे सूर्य को ढ़कने वाले बादल को हवा हटा देती है वैसे ही आत्मा को ढके हुए प्रकृति रूपी बादल को हवा रूपी सन्त हटा देते हैं इससे स्पष्ट होता है कि सन्त मानव के परममित्र होते हैं। संसारी मित्र संसार सम्बन्धी सहायता तो कर सकते हैं परन्तु अध्यात्म सम्बन्धी सहायता तो परममित्र सन्त ही कर सकते हैं। अतः उनके योगदान को नहीं भुलाया जा सकता है। कुछ लोगों की मान्यता यह है कि परमात्मा सत्य तो है परन्तु निराकार है अतः उनके साकार दर्शन नहीं हो सकते हैं। इस विषय को इस प्रकार समझा जा सकता है जैसे बीज में पेड़ निराकार रूप में रहता है। जब तक वह पृथ्वी जल खाद आदि के माध्यम से वृक्ष के रूप में अंकुरित नहीं होगा तब तक उसका कोई विशेष लाभ नहीं होता है क्योंकि वृक्ष बने बिना उस पर न कोई मधुर फल लग सकता है और अन्य बीज भी उसमें नहीं बन सकता है। उसी प्रकार जब तक निराकार परमात्मा साकार नहीं होगा तब तक उसका विशेष लाभ नहीं मिल सकता है लोग साकार का अर्थ शरीर सम्बन्धी आकार से लगाते हैं परन्तु हमारे अन्दर फैला हुआ प्रकाश ही उसका साकार रूप है वह प्रकाश ही अज्ञान अन्धकार को दूर कर देता है। इस प्रकार निराकार साकार के भेद को सन्त पूरी तरह से समझा देते हैं। धर्म ग्रन्थों को पढ़ने से भेद नहीं खुल पाता है धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने पर भी लोग प्रतीक पूजाओं को ही कर रहे हैं। सत्य ब्रह्म परमात्मा हमारे अन्दर ही है जो व्यक्ति सत्य ब्रह्म के सत्य ज्ञान का साधन आन्तरिक रूप से करता है वही परम शान्ति को प्राप्त होता है क्योंकि सत्य ब्रह्म ही सच्ची शान्ति का स्रोत है।

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल, रोहिणी, दिल्ली संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्म सत्संग संस्था के संस्थापक तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी के तत्वाधान में "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11 में दिनांक 22.11.2020 को आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली प्रान्त व आस–पास के जिलों से पधारे सक्रिय प्रेमी जनों ने भाग लिया। महात्मा जी ने अपने प्रवचन में निष्काम कर्म के साधन पर विशेष बल देते हुए प्रेमियों को समझाया कि इसे अपने जीवन में उतारने का पूरा प्रयास करें क्योंकि कामना एवं वासना ही मानव को बन्धन मुक्त नहीं होने देती है। सभी सत्संग प्रेमियों ने बड़ी श्रद्धा से सत्संग श्रवण कर अपने जीवन को सफल बनाया। इस सत्संग कार्यक्रम में सुदर्शन चैनल से पधारे आँचल एवं जोजो पत्रकार एवं नन्द किशोर कैमरा मैन ने महात्मा जी का सत्संग चैनल पर प्रदर्शित करने के लिए रिकार्ड किया उनके द्वारा अध्यात्म सम्बन्धी अनेक प्रश्न महात्मा जी से पूछे गये। जिनका महात्मा जी ने सटीक उत्तर दिया। अन्त में उन्होंने महात्मा जी का धन्यवाद किया तथा सत्संग से बहुत प्रभावित हुए।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका को पढ़कर ज्ञात हुआ कि समस्त बाह्यपूजा अविधिपूर्वक है जो मानव को परमात्मा से नहीं मिला सकती है। आन्तरिक पूजा ही परमात्मा की सच्ची पूजा है।

– सुरेन्द्रसिंह पथौली (मेरठ)

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में दिये गये महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी के प्रवचन साधक को साधना के उच्च स्तर तक पहुँचाने में पूर्णरूप से सहायक हैं पत्रिका को पढ़कर साधना की लगन तेज हो जाती है।

– यशवीर सिंह सिसौना, मु॰ नगर

3: "अध्यात्म संदेश" मासिक पत्रिका को निरन्तर पढ़ने से ज्ञान मार्ग पर चलने की मर्यादाओं का बोध होता है। मर्यादाओं का पालन करने वाला व्यक्ति साधना के मार्ग पर चलने में समर्थ हो सकता है।

– सेवा सिंह (अवन्तिका, दिल्ली–85)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका को पढ़ने एवं विक्रान्त कौशिक प्रेमी के सम्पर्क में आने पर मेरे जीवन की दिशा ही बदल गयी मैंने "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली में आकर तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी से तत्वज्ञान के लिए प्रार्थना की। उन्होंने मुझे तत्व ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराया। मेरे जीवन के वे मधुर क्षण अविस्मरणीय है। इसके लिए मैं महात्मा जी का हृदय से आभारी हूँ।

– गाँव– गिंझोड़, सैक्टर–53, नोयड़ा

G-3/DL(N)/202/2019-21

आत्म ज्ञान प्रकाश मंडल संस्था द्वारा एक अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

दिनांक 22.11.2020 को 'चेतन योग मोक्ष धाम' में तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी के सान्निध्य में किया गया। जिसमें दिल्ली प्रान्त एवं आस–पास के जिले से प्रेमी श्रद्धालुजन उपस्थित हुए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं महात्मा परम चेतनानन्द, चेतन योग आश्रम, सी.एस./ओ.सी. एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी

मुद्रक : डोनाल्ड प्रिंर्टस, 1/11, डीएसआईडीसी, उद्योग नगर, रोहतक रोड़, दिल्ली–110041

– प्रेमी गजेन्द्र सिंह
सम्पादक "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका